कृतज्ञता-ज्ञापन

कोई भी बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य कभी भी किसी दूसरे के सहायता के बिना संपन्न नहीं हो पाता उसके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

ईश्वर इस सृष्टि का रचनाकार है। किसी भी कार्य के पूरा होने में ईश्वर की कृपा अवश्य ही होती है इसलिए सर्वप्रथम मैं ईश्वर का आभारी हूं जिनके कृपा से मैं इतना कठिन कार्य पूर्ण कर सका।

ईश्वर के पश्चात् परमपूजनीय माता-पिता के चरणों में सादर प्रणाम करता हूं जिनका आशीर्वाद सदैव प्रेरणास्पद रहता है मैं मेरे माता **श्रीमती सोनकली देवी** एवं पिता **श्री रमाशंकर पटेल** का आजीवन ऋणी रहूंगा जिनके आशीर्वाद, प्रेरणा एवं सहायता से मैं इस मुकाम पर पहुंच सका हूं।

सर्वप्रथम मैं अपने परम श्रद्धेय गुरुवर शोध निर्देशक **प्रो० दीपेंद्रसिंह पी० जाडेजा** एवं **प्रो० लता सुमंत** जी के प्रति श्रद्धावान हूं। प्रस्तुत शोध प्रबंध आपकी प्रेरणा, प्रोत्साहन स्नेह एवं कुशल निर्देशन का परिणाम है। उन्होंने इस कार्य को लक्ष्य तक पहुंचने में अपना जो बहुमूल्य समय दिया एवं मार्गदर्शन किया उसे शब्दों में वर्णित करना मेरे अहं का सूचक होगा। आपकी स्नेहिल व्यवहार एवं ज्ञानपुंज की आभा से मेरा भविष्य भी प्रकाशमान होता रहे यही आदरणीय गुरु चरणों में मेरी आकांक्षा है।

मैं अपने हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष **प्रो० कल्पना गवली** के प्रति

आभार प्रकट करता हूं जिनके सानिध्य में मैंने अपना शोध प्रबंध पूर्ण किया।

मैं अपने हिंदी विभाग के आदरणीय पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० दक्षा मिस्त्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिनका स्नेह, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद मुझे आज तक प्राप्त होता आ रहा है।

मैं अपने विभाग के आदरणीय प्राध्यापकगण प्रो० शन्नौ पाण्डेय, डॉ० माया प्रकाश पाण्डेय, प्रो० के० वी० निनामा, डॉ० अनीता शुक्ला, डॉ० मनीषा ठक्कर, डॉ० एन० एस० परमार, डॉ० अजहर ढेरीवाला आदि गुरुजनों के प्रति आभारी हूं जिनका स्नेह, सहयोग एवं आशीर्वाद मुझे सदैव प्राप्त हुआ।

मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा गुजरात के पदाधिकारीयों एवं कर्मचारीयों एवं पुस्तकालय हंसा मेहता के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो० शिव प्रसाद शुक्ल जी एवं सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आणंद गुजरात के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० दयाशंकर त्रिपाठी जी का आभार व्यक्त करता हूं। जिन्होंने समय-समय पर मेरा उचित मार्गदर्शन किया।

मैं अपने पूजनीय दादी-दादी एवं नाना-नानी के प्रति नतमस्तक हूं। मेरे परिवारजनों में मेरे छोटे भाई प्रमोद सिंह पटेल, अरविंद सिंह पटेल एवं जीवन संगिनी ममता सिंह का भी बहुत सहयोग रहा है जिनकी सहायता से मुझे यह शोध प्रबंध पूर्ण करने में कोई कठिनाई नहीं हुई, मैं उनका भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

मैं अपने मित्रों एवं सहयोगियों में **प्रमोद कुमार सिंह, ,डॉ अशोक सिंह (प्रवक्ता),वीरेंद्र कुमार सिंह, ओम प्रकाश, प्रेम शंकर सिंह, नागेंद्र कुमार शर्मा, क्षेत्र सिंह, डॉ ईश्वर अहिर, राकेश कुमार यादव, सुनील यादव, डॉ विजय यादव, शिव कैलाश यादव, सागर देसले, जितेंद्र वाघेला, योगेश पटेल (बड़ोदरा), हेमलता, आशा साल्वे** आदि जिन्होंने शोध प्रबन्ध की पूर्णता में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया है । इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन लोगों ने मेरे उत्साह में बढ़ोतरी की तथा मेरी सहायता की उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूं।

मैं कृतज्ञ हूं अपने प्रिय लेखिका **नासिरा शर्मा** जी का जिन्होंने अपनी व्यस्त जीवन शैली में से कुछ सुनहरे पल मुझे साक्षात्कार के रूप में देकर बड़ी आत्मीयता से मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया वह क्षण जीवन भर के लिए अविस्मरणीय रहेगा।

मैं उन सभी साहित्यकारों और समीक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी कृतियों से मैंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहायता और विचारोत्तेजना प्राप्त की हैं।

मैं अपने इस महत्वाकांक्षी शोध प्रबंध को कभी पूर्णता तक न पहुंचा पाता यदि गुरुजनों एवं परिजनों का आशीर्वाद और स्नेह का संबल कदम कदम पर मेरे साथ ना होता। मेरे शोध निर्देशेक आदरणीय **प्रो० दीपेंद्रसिंह पी० जाडेजा, एवं प्रो० लता सुमंत एवं विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो० कल्पना गवली,** का मार्गदर्शन, उत्सावर्धन व सुझाव मिला इनके आशीषो की छाया निरंतर मेरे साथ

रही है जिनके कारण मैंने यह असंभव सा कार्य संभव व पूर्ण कर पाया।

यह शोध प्रबंध भविष्य में अनुसंधित्सुओ के लिए काम आ सके, इसी उम्मीद के साथ में अपने शब्दों को विराम देता हूं।

शोध-छात्र

राजेश कुमार पटेल

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,

बडौदा, गुजरात